Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January 2024 5(1), 851–856

POLITICAL ANALYSIS OF THE NATH SECT

नाथ संप्रदाय का राजनीतिक विश्लेषण

Sarwan Singh Baghel [1], Ritu Singh Meena [2]

[1] Research Scholar, Maharishi University of Information Technology, Lucknow, India
[2] Research Director, Maharishi University of Information Technology, Lucknow, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.2306

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Nath is a sect of Hinduism. There are many sects in Hinduism. The Nath sect today comprises a group of renunciant ascetics and a householder caste, both of whom trace their lineage to a group of nine Nath gurus, headed by Adinatha ("First Nath"), who is identified with Lord Shiva. In most lists of the nine Naths, Matsyendranath is next, followed by Gorakshanath (Gorakhnath), who is said to have founded the Nath sect of ascetics. This article is based on the Nath sect spread across the city of Gorakhpur, Uttar Pradesh and the entire country. It aims to present in miniature the contradictions, political upheavals, economic scale and theories and receptions of social construction, which play an important role for the 'national movement' and the 'national individual'. This article focuses on the current Chief Minister of Uttar Pradesh, Adityanath Yogi, and attempts to study his political performance in light of his background as a member of the Shaivite sect of Nath Yogis.

Hindi: नाथ हिंदू धर्म का संप्रदाय है। हिन्दू धर्म में कई संप्रदाय हैं। नाथ सम्प्रदाय में आज त्यागी तपस्वियों और गृहस्थ जाति का एक समूह शामिल है, जो दोनों अपनी वंशावली नौ नाथ गुरुओं के एक समूह से जोड़ते हैं, जिनका नेतृत्व आदिनाथ ("प्रथम नाथ") करते हैं, जिनकी पहचान भगवान शिव से की जाती है। नौ नाथों की अधिकांश सूचियों में अगला नाम मत्स्येन्द्रनाथ का आता है, उसके बाद गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) का नाम आता है, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने तपस्वियों के नाथ संप्रदाय की स्थापना की थी। यह लेख गोरखपुर शहर, उत्तर प्रदेश और पूरे देश में फैले नाथ संप्रदाय पर आधारित है। इसका उद्देश्य अंतर्विरोधी, राजनीतिक उथल-पुथल, आर्थिक पैमाने और सामाजिक निर्माण के सिद्धांतों और स्वागतों को लघु रूप में प्रस्तुत करना है, जो 'राष्ट्रीय आंदोलन' और 'राष्ट्रीय व्यक्तिगत' के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह लेख उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री, आदित्यनाथ योगी पर ध्यान केंद्रित करता है, और नाथ योगियों के शैव संप्रदाय के सदस्य के रूप में उनकी पृष्ठभूमि के साथ उनकी राजनीतिक कार्यकुशलता का अध्ययन करने का प्रयास करता है।

1. प्रस्तावना

भारत और नेपाल में हिंदू धर्म के अंतर्गत एक शैव उप-परंपरा है। जो शिव को अपने पहले भगवान या गुरु मानते हैं,उनमें अतिरिक्त भगवानों की अलग-अलग सूचियां हैं। गोरखनाथ को नाथ पंथ का प्रवर्तक माना जाता है। 1

नाथ परंपरा का अपना एक व्यापक शैववाद-संबंधी धार्मिक साहित्य हैए जिसका अधिकांश भाग 11वीं शताब्दी ईण्ए या उसके बाद का है। व्यक्ति के शरीर को पूर्ण वास्तविकता के साथ-साथ जागृत आत्मा की पहचान के सहज सिद्ध रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। एक गूढ़ गुरुए यानी एक योग और आध्यात्मिक मार्गदर्शक, को आवश्यक माना जाता है, 2, और नाथ परंपरा को ऐतिहासिक रूप से अपना गूढ़ और अध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में जाना जाता है।

संस्कृत शब्द नाथ का शाब्दिक अर्थ भगवान, रक्षक, स्वामी, है।3, 4, संबंधित संस्कृत शब्द आदि नाथ का अर्थ है प्रथम या मूल भगवान, और यह नाथों के संस्थापक शिव का पर्याय है। नाथ संप्रदाय में दीक्षा के लिए -नाथए 5, -योगीए या -जोगी में समाप्त होने वाला नाम प्राप्त करना शामिल है।

योग विद्वान जेम्स मैलिन्सन के अनुसारए नाथ शब्द 18वीं शताब्दी से पहले योगी या जोगी के नाम से पहचाने जाने वाले विभिन्न समूहों के लिए एक नवशास्त्र है। हालांकि, नाथ परंपरा के भीतर, यह कहा जाता है कि पहचानकर्ता नाथ की शुरुआत 10वीं शताब्दी में मत्स्येंद्रनाथ और उनके गुरु शिवए जिन्हें आदिनाथ (प्रथम भगवान) के नाम से जाना जाता है, से हुई। ईस्ट इंडिया कंपनी और बाद में ब्रिटिश राज के दौरान, यायावर योगियों का दमन किया गया और कई को गृहस्थ जीवन जीने के लिए मजबूर किया गया। उत्तर भारत में उनकी राजनीतिक और सैन्य शक्ति को सीमित करने के प्रयास में उनकी कई प्रथाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

नाथ शैव धर्म के भीतर एक उप-परंपरा है, जो अपने वंश का पता नौ नाथ गुरुओं से लगाते हैं, जिनमें से पहले शिव या आदिनाथ हैं।6, शेष आठ की सूची नाथ संप्रदाय के क्षेत्रों के बीच कुछ हद तक असंगत हैए लेकिन आम तौर पर इसमें लगभग 9वीं शताब्दी के मत्स्येंद्रनाथ और लगभग 12वीं शताब्दी के गोरक्षनाथ के साथ-साथ छह और शामिल हैं। अन्य छह बौद्ध ग्रंथों जैसे अभयदत्तश्री और हिंदू ग्रंथों जैसे वर्णरत्नाकर और हठप्रदीपिका के बीच भिन्न हैं। सबसे आम शेष नाथ गुरुओं में कौरंगी (सारंगधर, पूरन भगत), जालंधर (बालनाथ, हडिपाद्ध, कार्पाथ, कान्हापा, नागार्जुन और भर्तृहरि शामिल हैं।7

नाथ परंपरा कोई नया आंदोलन नहीं था, बल्कि भारत की एक बहुत पुरानी सिद्ध परंपरा का एक विकासवादी चरण था। सिद्ध परंपरा ने योग की खोज कीए इस आधार पर कि मानव अस्तित्व एक मनो.रासायनिक प्रक्रिया है जिसे मनोवैज्ञानिकए कीमिया और शारीरिक तकनीकों के सही संयोजन से परिपूर्ण किया जा सकता हैए जिससे व्यक्ति को उच्चतम आध्यात्मिकता की स्थिति में सशक्त बनाया जा सकता हैए वह अपनी इच्छानुसार सर्वश्रेष्ठ स्थिति में रह सकता है और जब वह चाहे तो शांतए आनंदमय पारलौकिक अवस्था में मर सकता है। सिद्ध शब्द का अर्थ है ष्पूर्णष्ए और यह आधार सिद्ध परंपरा तक ही सीमित नहीं थाए बल्कि आयुर्वेद के रसायन विद्यालय जैसे अन्य लोगों द्वारा भी साझा किया गया था।8,

मैलिन्सन के अनुसारए ष्मत्स्येन्द्र और गोरक्ष के अधिकांश प्रारंभिक पाठ्य और अभिलेखीय संदर्भ दक्कन क्षेत्र और प्रायद्वीपीय भारत के अन्य स्थानों से हैंय अन्य पूर्वी भारत से हैंष्। नाथ.जैसे योगियों की सबसे पुरानी प्रतिमा कोंकण क्षेत्र (महाराष्ट्रए गोवाए कर्नाटक के तट के पासद्ध में पाई जाती है)।9,

विजयनगर साम्राज्य की कलाकृतियों में उन्हें शामिल किया गया हैए जैसा कि अब महाराष्ट्रए उत्तरी कर्नाटक और केरल के रूप में जाने जाने वाले क्षेत्र के ग्रंथों में है। माहुआन नामक चीनी यात्री ने भारत के पश्चिमी तट के एक हिस्से का दौरा कियाए एक संस्मरण लिखा और उसने नाथ योगियों का उल्लेख किया। नाथ परंपरा के सबसे पुराने ग्रंथ जो तीर्थ स्थलों का वर्णन करते हैंए उनमें मुख्य रूप से दक्कन क्षेत्र और भारत के पूर्वी राज्यों के स्थल शामिल हैंए जिनमें उत्तरए उत्तर.पश्चिम या दक्षिण भारत का शायद ही कोई उल्लेख है।10,

यह समुदाय राजस्थान के कुछ हिस्सों में भी पाया जा सकता है लेकिन ये अन्य जातियों की तरह सामान्य हैंए जिन्हें अन्य पिछड़ी जातियाँ माना जाता है। गोरक्षनाथ को पारंपरिक रूप से संन्यासी तपस्वियों की परंपरा की स्थापना का श्रेय दिया जाता हैए लेकिन एक संगठित इकाई (संप्रदाय) के रूप में नाथ तपस्वी आदेश के बारे में सबसे शुरुआती पाठ्य संदर्भ, जो आधुनिक युग में बचे हुए हैंए 17 वीं शताब्दी के हैं। 17 वीं शताब्दी से पहलेए जबकि एक मठवासी संस्था के रूप में नाथ संप्रदाय का उल्लेख गायब हैए नाथ शैव लोगों के बारे में व्यापक पृथक उल्लेख पिछली शताब्दियों के शिलालेखोंए ग्रंथों और मंदिर की प्रतिमाओं में पाए जाते हैं।11,

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन काल से ही महान भारतीय संतों और ऋषियों का उद्देश्य ष्जीवनष् और ष्संसारष् की आध्यात्मिक अवधारणा के अनुसार भौतिक अस्तित्व की प्राथमिक आवश्यकता को सिखाना रहा है। हर संभव तरीके सेए उन्होंने सर्वोच्च आध्यात्मिक वास्तविकता और मानव जीवन के परम आध्यात्मिक आदर्श को एक साथ लाने की कोशिश की, यहाँ तक कि सबसे साधारण मानव जीवन में भी लोगों को ईश्वर.चेतना

से भरकरए उन्होंने दुनिया की आध्यात्मिक चेतना को जगाने की कोशिश की। और ऐसा ही ष्शिवपंथष् के ष्योगीष् और ष्संन्यासीष् भी करते हैंए जिन्होंने अपने बीच ष्शिवष् की उपस्थिति महसूस करके दृष्टिकोण को आध्यात्मिक बनाने की कोशिश की।

हिंदू उपनिषदों में श्शिवश् को श्तमसश् या पूर्ण अंधकार पर शासन करने वाली सर्वोच्च आत्मा के रूप में दर्शाया गया है। वह तीन श्त्रिदेवोंश् में से एक हैंए जो सर्वोच्च आत्मा से जुड़े प्रमुख पहलू हैंए जिन्हें श्ब्रह्माश्ए श्विष्णुश् और श्रुद्रश् के रूप में व्यक्त किया गया है। जहां श्रुद्रश् स्वयं श्शिवश् हैं। वे सर्वोच्च आत्मा हैंए जो विश्व प्रक्रिया के तीन पहलुओं के संबंध में तीन अलग.अलग रूपों में प्रकट होते हैं। ये हैं श्सृजनश्ए श्पोषणश् और श्विनाशश्। सृजन ब्रह्मा से जुड़ा हैए पालन विष्णु से और विनाश का विचार शिव से जुड़ा है। इसके साथ हीए एक दिव्य शक्ति हैए श्महा.शक्तिश्ए जो ब्रह्मांडीय प्रक्रिया का गतिशील स्रोत है। उस श्शक्तिश् में तीन गुण होते हैं. श्रजसश्ए श्सत्वश् और श्तमसश् तदनुसारए तीन प्रकार के लोग हैंए जो ब्रह्माए विष्णु और शिव . तीनों देवताओं में से किसी एक से मोहित होते हैं। ब्रह्मा और विष्णु श्प्रवृत्ति मार्गश् के पसंदीदा देवता हैंए जबकि शिव श्निवृत्ति मार्गश् के पसंदीदा देवता हैं।

श्नाथ.पंथी संप्रदायश् एक ऐसा संप्रदाय हैए जो श्निर्वाणश् या श्मोक्षश् प्राप्त करने के लिए श्निवृत्ति.मार्गश् का अनुसरण करता है। श्निवृत्तिश् का अर्थ हैए मन के भीतर से संन्यास लेना या मन का पूर्ण रूप से रुक जाना। और श्योगश् के अभ्यास के माध्यम सेए वे मन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करते हैं। यह भारत के सबसे व्यापक धार्मिक संप्रदायों में से एक है। संप्रदाय आदिनाथए महा.योगीश्वर या स्वयं शिव को अपना श्आदि.गुरुश् मानता है। मत्स्येंद्रनाथ को उनका प्रत्यक्ष शिष्य माना जाता थाए और बदले में गोरखनाथ मत्स्येंद्रनाथ के शिष्य थे। और इन दो महा.योगियों को शिव के सबसे महिमामंडित अवतार के रूप में देखा जाता है। महाकाल योगशास्त्र में स्वयं शिव ने कहा है. ष्अहमेवस्मिगोरक्षो माद्रूपा ताङ्ग्यीबोधताय योगमार्ग प्रचार्या मायारूपीदां घृतम्ष्। शिव कहते हैं कि योगमार्ग का प्रचार करने के लिए उन्होंने स्वयं श्गोरक्षश् के रूप में जन्म लिया है। इसलिए उन्हें सच्चिदानंद शिव का अवतार माना जाता है। और सभी युगों में सबसे अधिक ध्यान करने वाले व्यक्ति माना जाता है ।

योगी.गुरु गोरखनाथ द्वारा स्थापित मठवासी संप्रदाय को आम तौर पर ष्नाथ.योगीष् या ष्सिद्ध.योगीष् के नाम से जाना जाता है। संप्रदाय की मान्यता के अनुसारए गुरु गोरखनाथ का जन्म ष्सतयुगष् में पेशावर मेंए ष्त्रेता.युगष् में गोरखपुर मेंए ष्द्वापर.युगष् में द्वारका में और ष्कलियुगष् में सौराष्ट्र में हुआ था। जैसा कि प्रोफेसर जीण्डब्ल्यूण् ब्रिग्स ने प्रमाणित किया हैए ष्नाथ.योगीष् व्यापक रूप से फैले हुए तपस्वी संप्रदाय हैंए जो भारत में हर जगह पाए जाते हैं। सदियों सेए योगी.गुरु और उनके अनुयायियों ने विशाल उपमहाद्वीप के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव डाला है।

सभी योगियों का अंतिम लक्ष्य प्रकृति पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करके श्नाथश्ए ईश्वर बनना है। इसके लिएए योगी श्प्रकृतिश् पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए शारीरिकए मानसिकए नैतिक और आध्यात्मिक अनुशासन का एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम अपनाते हैं। इस प्रक्रिया मेंए वे इसके वस्तुनिष्ठ पहलुओं को देखते हैंए जो कि मनए शरीरए इंद्रियों और बुद्धि को नियंत्रित करना हैए साथ ही श्समयश् और श्स्थानश् की अवधारणा पर विजय प्राप्त करना है। और अपनी आंतरिक प्रकृति की सभी संभावनाओं को समझते हुए श्सिद्धिश् प्राप्त करते हैं। सभी बंधनोंए सीमाओं और दुखों से ऊपर उठकरए वे मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं।

अज्ञान का आवरण हटाकर वे परम सत्य के सच्चे दर्शन प्राप्त करते हैंए जिसके साथ वे एकाकार हो जाते हैं। इस प्रकारए श्नाथश् नाम उन्हें निरंतर उस सर्वोच्च आध्यात्मिक आदर्श की याद दिलाता हैए जिसके लिए वे योग के मार्ग को अपनाकर प्रवेश कर चुके हैं। अक्सरए नाम से उन्हें याद दिलाया जाता है कि वे अपनी ऊर्जा को किसी निम्न स्तर पर या योग का अभ्यास करके किसी रहस्यमय शक्ति को प्राप्त करने में न लगाएं। बल्किए अभ्यास के दौरान अर्जित शक्ति को उच्च स्तर पर अपने स्वयं के उत्थान के लिए निर्देशित करें। अंततःए आध्यात्मिक पूर्णता और परम ज्ञान प्राप्त करने से उन्हें इस शारीरिक जीवन में पूर्ण स्वतंत्रताए आनंद और श्मुक्तिश् या श्कैवल्यश् का अनुभव प्राप्त होता है। और इस तरह की शारीरिक आध्यात्मिकता जिसे श्काया.सिद्धिश् के रूप में जाना जाता हैए लौकिक और स्थानिक स्तरों से परे जाकर अमरता प्राप्त करती है।

3. राजनीतिक पृष्ठभूमि

गोरखपुर मठ की राजनीतिक खेल में सक्रिय भागीदारी 20वीं सदी के दूसरे दशक में शुरू हुई। उससे पहलेए ऐसा लगता है कि मठ अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण थाए लेकिन इसके महंतए इसके प्रमुखए आध्यात्मिक मामलों में अधिक व्यस्त रहते थे और सांसारिक मामलों को अकेला छोड़ देते थे। महंत दिग्विजयनाथ (जन्म 1894 . सिंहासनारूढ़ 1935 . मृत्यु 1969) के आने के बाद सब कुछ बदल गया। मेवाड़ के राजसी परिवार राणा नन्हू सिंह में जन्मेए फिर अनाथ हो गएए उन्हें एक चाचा ने गोरखपुर मठ की देखभाल के लिए सौंप दिया। उन्होंने अपनी युवावस्था एक तकनीकी कॉलेज में पढ़ाई करते हुए बिताई। उनकी असली रुचि राजनीति में थीए और 1921 में वे कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गएए लेकिन मुसलमानों के प्रति तुष्टिकरण की नीति से नाराज़ थे। सावरकर के भाषण सुनने के बाद उन्होंने हिंदू महासभा से जुड़ाव बदल लिया।

जैसा कि मठ के प्रमुख दार्शनिक और इतिहासकार एण्केण् बनर्जी (1979)12, ने लिखारू जब वर्तमान महंत दिग्विजयनाथ महंत की गद्दी के उत्तराधिकारी बनेए तो उन्होंने पाया कि संस्था आर्थिक रूप से खराब स्थिति में थीण्ण्ण् पिछले महंतए जो आम तौर पर दूसरे दुनिया के संत व्यक्ति थेए स्वाभाविक रूप से संस्था के ऐसे बाहरी सुधारों के प्रति उदासीन थे। गंभीरनाथए ष्एक महान महायोगी जिन्हें अलौकिक योगी शक्तियों वाले एक पूर्ण प्रबुद्ध संत के रूप में सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त थी और जो लगभग हमेशा गहरी ध्यान मुद्रा में रहते थे और उनकी चेतना का कम से कम हिस्सा बाहरी मामलों से संबंधित होता थाष्।

हिंदू धर्म के प्रति यह प्रेम ही वह तत्व होगा जो सावरकर के विचारों के करीब था और उन्हें 1937 में आगे ले गया। वे महासभा के कई कार्य आंदोलनों और भगवान राम के जन्म स्थान को मुक्त करने के आंदोलनों में शामिल थे। ष्वे 1967 में लोकसभा के लिए चुने गएए एक प्रारंभिक कदम जिसका उनके दो उत्तराधिकारियों ने अनुकरण किया। वे हिंदुओं के लिए अपने समय के महाराणा प्रताप थे। उनके व्यक्तित्व ने ब्राह्मण और क्षत्रिय की शक्ति को एकजुट कियाष् (महंत दिग्विजयनाथ स्मृति.ग्रंथ 1971रू1976)।

दिग्विजयनाथ द्वारा शुरू की गई नई दिशा मठ की निम्नलिखित कहानी और उनके उत्तराधिकारियों महंतोंए अवेद्यनाथ और आदित्यनाथ के कार्यों पर हावी हो गई। जो बात लगातार सामने रखी जाती है वह है उनकी क्षत्रिय या ठाकुर जाति की पहचान और हिंदू धर्म की रक्षा में उनकी भागीदारीए उनकी योद्धा शक्ति हिंदू धर्म के लिए है।13,

गढ़वाली क्षत्रिय परिवार में जन्मे अवेद्यनाथ अपेक्षाकृत कम उम्र में ही गोरखपुर मठ से जुड़ गए थे। 1942 में दिग्विजयनाथ द्वारा शुरू किए गए इस मठ में उन्होंने अपने भावी उत्तराधिकारी को मनोनीत किया। उन्होंने हिंदू महासभा में अपने गुरु का अनुसरण किया। गोरखपुर परिक्षेत्र मेंए वे पांच बार यूपी स्थानीय विधानसभा के सदस्य और चार बार लोकसभा (संसद के निचले सदन) के सदस्य चुने गए। हिंदुत्व एजेंडे में उनकी भागीदारी ने उन्हें 1984 में राम की जन्मभूमि की मुक्ति के लिए अयोध्या में हुए आंदोलन की अध्यक्षता दिलाई।14,

उत्तर प्रदेश में अयोध्या और बाबरी मस्जिद और राम मंदिर के आसपास का संघर्ष गोरखपुर के महंतों की राजनीतिक भागीदारी में लगातार केंद्र में रहा। जब आदित्यनाथ को उसी दिन मंदिर के भावी निवास स्थान पर राम प्रतिमा ले जाने वाले जुलूस का नेतृत्व करते हुए देखा और प्रचारित किया गया था जिस दिन नरेंद्र मोदी ने कोविड.19 लॉकडाउन की घोषणा की थी ।14,

आदित्यनाथ अवेद्यनाथ के शिष्य और उत्तराधिकारी हैं। 1972 में जन्मेए एक गढ़वाली क्षत्रिय परिवार मेंए उन्होंने राजनीति में बहुत कम उम्र में शुरुआत कीए एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में छात्र संघ चुनाव में भाग लिया और बाद में 1998 के राष्ट्रीय चुनाव में भाजपा के टिकट पर चुने गएए जो लोकसभा में सबसे कम उम्र के सदस्य थे। उन्हें प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2017 में उत्तर प्रदेश के भाजपा के मुख्यमंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था।ख्15,

आदित्यनाथ की शक्ति विशेषताएँ उनके व्यवहार और कार्यों को तीन विषयों के साथ संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता हैरू क्षत्रिय प्रभुत्वए हिंदू आयामए मुसलमानों के लिए घृणा। तीनों तत्व आपस में जुड़े हुए हैं और आदित्यनाथ के प्रदर्शन और सर्वव्यापी योजना ;विशेष रूप से मीडिया मेंद्ध को पूरा करते हैं।

क्षत्रिय पक्षगोरखपुर शहर अपने माफिया.शैली के व्यापार और राजनीति के मिश्रण के लिए जाना जाता है।

चतुर्वेदीए गेलनर और पांडे (2019) के अनुसार, हिंसक टकराव एक विश्वविद्यालय बनाने की प्रतिद्वंद्विता से शुरू हुआ। हालाँकिए ष्यह व्यापक रूप से माना जाता है कि जब तक अवैद्यनाथ गोरख प्रसादी राजनीति के शीर्ष पर थेए तब तक स्थानीय माफिया राजनीति में मठ की ओर से कोई हस्तक्षेप नहीं थाष्।ख्14, 1998 मेंए अवैद्यनाथ अपने शिष्य और उत्तराधिकारी आदित्यनाथ के लिए सक्रिय राजनीति से सेवानिवृत्त हो गए।

आज भले ही योगी आदित्यनाथ सियासी फ़ायदे के लिए संप्रदायों का ध्रुवीकरण करते होंए लेकिन हाल ही में सामने आए दो अप्रकाशित सिद्धांत बताते हैं कि 20वीं शताब्दी से पहलेए नाथ संप्रदाय के सदस्य सत्ता पाने के लिए धार्मिक मेलजोल का सहारा लिया करते थे।

पिछले कुछ महीने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ के लिए काफी कठिन रहे हैंण् गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर का यह महंत त्रिपुरा से कर्नाटक तक भारत के इस छोर से उस छोर तक घूम.घूम कर अपनी आध्यात्मिक छवि के नाम पर भाजपा के लिए वोट मांग रहा है।

सियासी मामलों में नाथयोगियों का शामिल होना असामान्य नहीं हैए मगर आदित्यनाथ जिस तरह से दक्षिणपंथी हिंदुत्ववादी लफ्फाजियों का इस्तेमाल वोट पाने के लिए कर रहे हैं वह उनके संप्रदाय की परंपरागत खासियतों के उलट है।

हाल ही में सामने आये और अब तक अप्रकाशित रहे नाथ सिद्धांतों. अवलि सिलूक और काफ़िर बोध से गुजरने पर पता चलता है कि भले ही आदित्यनाथ सियासी फायदे के लिए संप्रदायों को ध्रुवीकरण करते होंए लेकिन 20वीं शताब्दी से पहलेए नाथ संप्रदाय के सदस्य सत्ता पाने के लिए धार्मिक मेलजोल का सहारा लिया करते थे।

4. निष्कर्ष

आज नाथ संप्रदाय का सबसे प्रसिद्ध चेहरा आदित्यनाथ अपने प्रभाव का इस्तेमाल नाथ योगियों के विविध इतिहास को दबाने के लिए कर रहे हैंए लेकिन राजनीतिक मोड़ के रूप में नाथ संप्रदाय का हिंदूकरण पूरी तरह से 20वीं सदी की रचना है। हालांकि नाथ योगी सदियों से राजनीति में शामिल रहे हैंए लेकिन महंत दिग्विजय नाथ ;1934.69द्ध के नेतृत्व में ही गोरखनाथ मंदिर परिसर अपने समावेशी राजनीतिक अतीत से हिंसक रूप से दूर होने लगा। हालाँकि उपनिवेशवादए आधुनिकता और नए उभरते हिंदू बहुसंख्यकवाद ने विभिन्न नाथ संप्रदायों के अपनी पहचान को परिभाषित करने और अपने राजनीतिक प्रभाव को बनाए रखने के तरीके को गहराई से प्रभावित कियाए लेकिन गोरखपुर में दिग्विजय नाथ के नेतृत्व ने आदित्यनाथ के सांप्रदायिक एजेंडे की नींव रखी। हिंदुत्व की विचारधारा के प्रति दिग्विजय नाथ की प्रतिबद्धता नाथ संप्रदाय की आध्यात्मिक मान्यताओं के प्रति उनके उत्साह से कहीं अधिक थी। 1920 के दशक में गोरखनाथ मंदिर के बारे में जॉर्ज वेस्टन ब्रिग्स के विवरण के अनुसारए योगी के दीक्षा लेने से पहले ही दिग्विजय नाथ नाथ मंदिर परिसर का नेतृत्व संभालने के लिए मुकदमा लड़ रहे थे। उन्होंने वादा किया था कि अगर वे गद्दी पर बैठे तो वे संप्रदाय के सदस्य बन जाएंगे और अपने कान छिदवा लेंगे ;नाथ योगियों की पारंपरिक दीक्षाद्ध। उन्होंने मुकदमा जीत लियाए अपने कान छिदवा लिए और मंदिर के महंत बन गए। लेकिन जिस तरह से दिग्विजय नाथ की महंती की शुरुआत हुईए उससे यह स्पष्ट है कि वे अपने प्रभाव को एक अलगए कम आध्यात्मिक तरीके से दिखाना चाहते थे। आदित्यनाथ उनके पदचिन्हों पर चल रहे हैं। जबकि दक्षिण एशिया में प्रारंभिक नाथ ग्रंथों के पूर्ण महत्व और प्रसार को समझने के लिए बहुत अधिक अध्ययन की आवश्यकता हैए इन सिद्धांतों का फिर से उभरना इस बात का मजबूत सबूत है कि कैसे प्रारंभिक.आधुनिक नाथ संप्रदाय ने मुस्लिम और हिंदू समुदायों के भीतर अपने लिए एक स्थान की कल्पना की थी। नाथ परंपरा को पूरी तरह से समझने के लिए साहित्यिक परंपरा के भीतर उनके स्थान को पुनर्स्थापित करना आवश्यक है। ऐसे समय में जब भाजपा के सदस्य और विशेषकर आदित्यनाथ यह दावा कर रहे हैं कि भारतीय इतिहास के साथ छेड़छाड़ की गई हैए तो यह सलाह देना शायद गलत नहीं होगा कि गोरखनाथ मंदिर परिसर के महंत के रूप में योगी को पहले अपने समुदाय के लेखन और इतिहास की जांच करनी चाहिए।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Mallinson, James (2011). 'Nath sect'. Brill Encyclopedia of Hinduism Vol. 3. Brill, pp. 407-428.
Storl 2004, p. 258 with footnotes.
Nathru Indian religious sects, Encyclopædia Britannica (2007).
Monier, Williams, Monier (2005). A Sanskrit-English Dictionary. Motilal Banarsidass. ISBN 978.8120831056.
White 2012, p. 355, note 8a, 100-101.
Mallinson 2012, p. 407-411.
Mallinson 2012, p. 409-411.
Muller, Ortega 2010, pp. 36, 37.
Mallinson 2012, pp. 410, 412.
Mallinson 2012, pp. 411, 413.
Mallinson 2012, pp. 407, 408.
Banerjee, Akshay Kumar, 1979. Nath-Yogi Sect and Gorakhnath Temple. Gorakhpur: Mahant Digvijaynath Trust.
Chaturvedi, Shashank, 2016. 'Religion, Culture and Power: A Study of Everyday Politics in Gorakhpur.' PhD Dissertation, Centre for Politics, JNU.
Chaturvedi, Shashank, David Gellner and Sanjay Kumar Pandey (2019). 'Politics in Gorakhpur Since the 1920s: The Making of a Safe Hindu Constituency', Contemporary South Asia, 27 (1): 40–57
Jha, Dhirendra K. 2017. Shadow Armies: Fringe Organisations and Foot Soldiers of Hindutva. New Delhi: Juggernaut Books
Singh, Bhagwati Prasad. Shri Mahant Digvijaynath Smriti Granth. Mahant Digvijaynath Trust Gorakhnath Mandir, Gorakhpur.
Shri Gorakhnath Mandir. 15 June 2021, 10-30 am.